सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

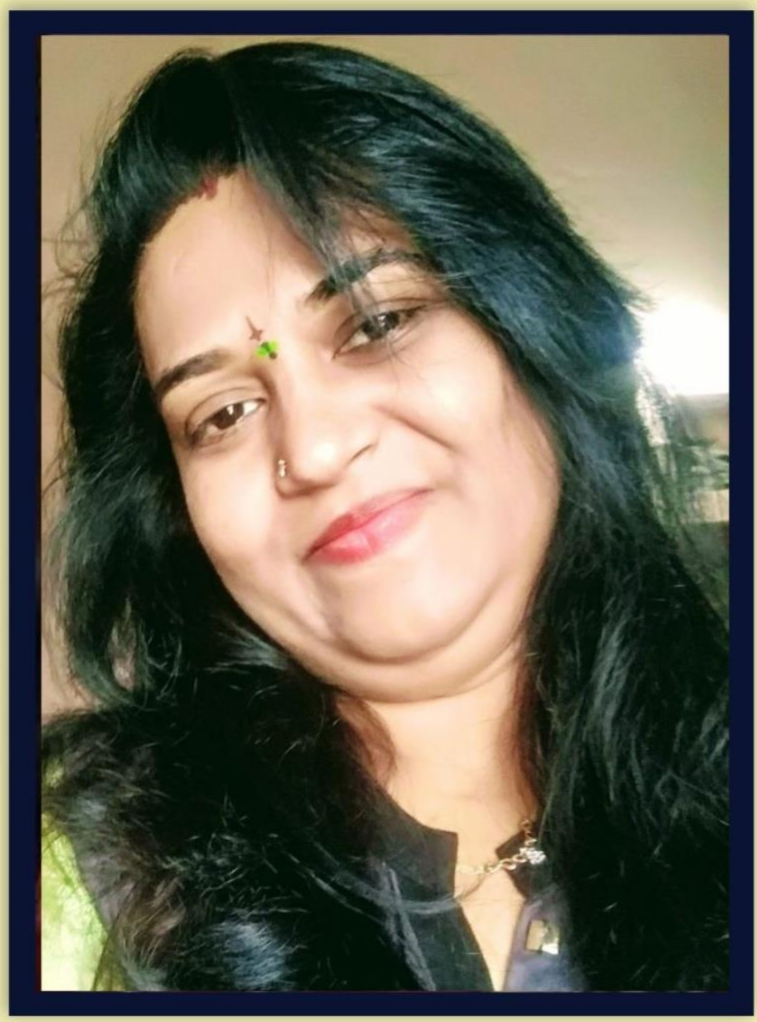

केन्द्रीय रचनाकार

●नवनीता दुबे 'नुपूर'

सृजक-सृजन-समीक्षा

नवनीता दुबे "नूपुर"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

नवनीता दुबे "नूपुर" का परिचय

नाम- नवनीता दुबे "नूपुर"
माँ- स्व. श्रीमति कमला दुबे
पिता- श्री ब्रिजेंद्र दुबे
पति - श्री मनोज दुबे
जन्म तिथि - 15 फ़रवरी 1974
पता- प्रज्ञा नगर देवदरा मण्डला म.प्र.
शिक्षा-एम ए (हिंदी साहित्य)&बी एड
विधा - काव्य सृजन और कहानियां एवं अन्य
Email - nupur.dubey74@gmail.com
रुचियाँ-साहित्य लेखन,संगीत
प्रकाशन- विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ छपती है।मंचों पर भी काव्य पाठ का अवसर।
जे एम डी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित 21 वीं सदी की श्रेष्ठ हिंदी कविताएँ एवम नारी चेतना की आवाज पुस्तकों में रचनायें प्रकाशित।
केवीएस प्रकाशन अनुबंध काव्य संग्रह मैं प्रकाशित रचनाएं
दैनिक समाचारपत्रों, पत्रिकाओं, एवम स्मारिकाओं में सम सामयिक विषयों पर निरन्तर रच नाओं का प्रकाशन।
मध्यप्रदेश लेखिका संघ एवम अनेक स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं की सदस्यता।
उपलब्धियां--जे एम डी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित 21 वीं सदी की श्रेष्ठ हिंदी कविताएँ एवम नारी चेतना की आवाज पुस्तकों की सम्पादक मंडल की सदस्य।

एक प्रकाशित काव्य संकलन
सम्मान--जे ऍम दी पब्लिकेशन द्वारा विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान 2013
राष्ट्रिय कवि संगम मध्यप्रदेश द्वारा साहित्य सक्रियता हेतु शब्द शकित 2016सम्मान।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018
समप्रति ---शासकीय B R C C कार्यालय नारायणगंज ,मण्डला में B A C के पद पर कार्यरत।
आत्मकथ्य
बचपन से मै अपनी स्वर्गीय माताजी को डायरी के पन्नो में रोजाना कुछ लिखते हूए देखती,व् समझने का प्रयास करती थी।
जब होश संभाला तो माँ की रचनाएं जो यथार्थ को छूती हूयी सम्वेदना से लिपि पुती समझ में आने लगी जो मुझे बहुत ही मन भावन भी लगती थीं।
उन्ही की प्रेरणा से मैने वर्तमान में सम्वेदना के धागों से कविता बुनना सीख लिया।
और आज अपने अहसासों को पन्नो पर उकेरना एक प्रवत्ति सी हो गयी अब।
मेरे अपनों ने मुझे लिखने को प्रेरित किया ,।
आज जो भी धूप, छांव ,फूल कांटे जिंदगी मुझे देती है और जो भी अनुभव मुझे जिंदगी अपने व् औरों की जिंदगी को जी कर मिल रहे है मैं साहित्य जगत से साझा कर रही हूं ।
आप सभी का प्यार व् आशीष सदैव मेरे साथ रहै
ऐसी आकांक्षा के साथ---

नवनीता दुबे "नूपुर"

"सृजक का सृजन"

पथिक

मैं तो पथिक हूँ
जीवन के टेढ़े मेढ़े
रोमांचक पथ पर
उल्लसित हो, अविरल बढ़ता
जा रहा हूँ
मुस्कान की पोटली में
सारी उदासी समेटे
ठोकरों को ठुकराते
दृढ़ता के उच्च शिखर पर
चढ़ता जा रहा हूँ
सपनों के गगन में नूपुर
स्वच्छंदता से विचरता
अनुभव सवांरता
मन की तरंगो पर
आशाओं के रंग बिखेरता
जीवन की किताब के
कीमती पन्नों पर
स्नेह के अंश गढ़ता जा रहा हूँ
मैं तो पथिक हूँ
अथक बढ़ता जा रहा हूँ

चेहरा

जय की खोज में
उलझा सा,
कुछ बुझा हुआ
सहमा हुआ सा
उद्दिग्नता की
वेगवती आंधी से
घिरा हुआ सा
कृत्रिम मुस्कान की
अनगिनत परतों तले
सिमटा हुआ सा
समय के अनुबंध से
लगभग टूटा हुआ सा
प्रतिस्पर्धा के मेले में
मिटा सा
अवसाद के काले धुएं में
कुछ घुटा घुटा सा
आत्म शांति की लकीरों से
पूर्ण रूपेण पिता हुआ सा
निरंतर जय की खोज में नूपुर
जुटा हुआ सा हर चेहरा
हाँ । यहाँ हर एक चेहरा

मेरा गांव

माटी की सौंधी गंध
सरसराती सरसों के संग, मंद मंद
रग रग में समा जाता, मेरा गांव
कच्चे आमों की बाजी
डालियों के झूले और
गोरियों की कुआंरी मुस्कानों के संग
त्योहारों की शान
पंछियों की मीठी जुबान
मूक चलचित्र बनकर
आँखों में छा जाता मेरा गांव
शहर की भीड़ में नूपुर
बहुत याद आता मेरा गांव

गुहार

माँ । आज तू ठान ले
बात मेरी मान ले
चाहे हों कर्कश ध्वनियाँ
तुझे कोसती ये आकृतियां
तू मुझे न भुलाना
अपनी कोख का
झूला झुलाना
लाख ताने मिलें तुझे
पर भूलना न तू मुझे
बेटों से बढ़कर मैं
कुल का नाम रौशन करूंगीं
फूल बरसेंगें तुझपर
ऐंसा मै कोई काम करूंगीं
मैं तेरी बगिया की कली
न मरोड़ मुझे फेंकना
तेरा सर ऊँचा होगा
माँ इक दिन तू ये देखना
चाहे कड़के तानों की बिजलियाँ
रूठ जाएँ चाहे सैकड़ो जिंदगियाँ
तुम मुझसे न रूठ जाना
निज कोख का झूला झुलाना
माँ तुम नूपुर को न भुलाना

फागुन का त्यौहार

सुरभित पुरवैया, रंगो की बौछार
जनमानस हर्षित, फागुन का त्यौहार
रंग बिरंगे, नीले पीले,
हरे गुलाबी चटकीले
रंगों की फुहार, फागुन का त्यौहार
अंगारों से पलाश, कर रहे
पवन से अठखेलियां
खिलखिलाकर चिटक रहीं कोमल कलियाँ
नभ से धरा तक, खुशियों का अधिकार
कहीं मीठे पकवान तो कहीं गुझिया सलोनी
कहीं पिचकारी चुन्नू की तो कहीं उड़ाती गुलाल मुन्नी
छन रही मन में, सपनों की भांग
मद माता भावनाओं का संसार नूपुर
जनमानस हर्षित, फागुन का त्यौहार
धर्म, जाति, भाषा के, भेद चक्रव्यूह तोड़
मानवीय सोच लिए मन को मन से जोड़
संस्कृति नेह करता, मानवता का शृंगार
जनमानस हर्षित, फागुन का त्यौहार

हिंदी

उपेक्षा की घूँट पीती
सिसकियों में बात कहती
विवशता की जंजीरों में जकड़ी
अपनी दुर्दशा पर आँसूं बहाती
विदेशी खंजरों से आहत
अपने ही वतन में सहमी
अपनों ने जब ठुकराया तो
बात क्या करें परायों की
कब तक उपेक्षित रहेगी
भारती के माथे की बिंदी
सम्मान के चीथड़े उड़ रहे
रौब जमा रही शान से फिरंगी
पाश्चात्य भाषा का चोला त्याग
अपनायें अपनी हिंदी भाषा
जन जन के सहयोग से ही
चमक उठेगी हिंदी की आशा
जागृत अब भी न हुए हम
तो इक दिन वो आएगा
जब उड़ने लगेगी राष्ट्र भाषा के
अस्तित्व की चिन्दी चिन्दी।

प्रेम

हाँ!!!
तुमसे प्यार है मुझे,
ये
बताने के लिये
जरूरी नही
कि
कोई
प्रेमदिवस हो,
या
मैं
महसूस न
कर सकूं
तुम्हारा प्यार
मन
इतना विवश हो।।।।।

दो दिलों में
पल रहा प्रेम
बस
स्वयं ही
सिद्ध हो
जाता
हल्की कभी

तीखी नोकझोंक
में
दबी
परवाह की
गहराइयों
व
रूह में
समाती
सदैव
मुस्कान देखने
की
आदी हुई आंखों का।

हाँ!!
प्यार है
तुमसे ये
कहना इतना
जरूरी नहीं
जितना कि
अहसास करके
प्यार को
जिंदा रखना और
कभी न
मुरझाने के
लिये
समय समय पर
परवाह व

सम्वाद का
खाद पानी
डालते रहना।।।

ताकि
कोई पतझड़
कोई
सुनामी
गमों की
न
ढहा सके
अपने
प्यार भरे
सपनों का
पुल
जो
सजाए हैं
हमने
आपसी
विश्वास
व
परवाह
के फूलों से।।।

"सृजन की समीक्षा"

1.

सादर अभिवादन

आज की उत्सव मूर्ति **नवनीता दुबे " नुपुर "** हार्दिक अभिनन्दन संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन, उपलब्धियाँ, सम्मान सभी बहुत प्रभावित कर रहे हैं। बचपन से माँ को लिखते हुए देखा , जिसने आपको लेखन के लिए प्रेरित किया। बहुत सुंदर, निश्छल, सौम्य छवि और व्यवहार आपका व्यक्तित्व है।

आपकी पहली रचना, **मैं तो पथिक हूँ**, बहुत सकारात्मक सोच है, दूसरी रचना, बेहतरीन छंदमुक्त रचना है , तीसरी रचना, **मेरा गाँव**, सुन्दर मनोभाव हैं, चौथी रचना, **गुहार**, बहुत मार्मिक चित्रण है , पाँचवीं रचना , **फागुन का त्योहार** , मनमोहन , उल्लासित करती हुई रचना, छठी रचना **हिन्दी**, हिन्दी भाषा के अस्तित्व को बचाने के लिए उसकी , व्यथा, उपेक्षा, महत्व को समझाया है , बहुत सुंदर रचना, सातवीं रचना , **प्रेम**, बहुत खूबसूरत रचना है।

अंतरा शब्द शक्ति, परिवार की सचमुच में **आप नुपुर हैं**, आशा है कि यह नुपुर साहित्य में सदियों तक गुंजायमान हों, आप स्वस्थ रहें, आनन्दमय रहें, अनन्त शुभकामनाएँ, मंगलकामनाएँ।

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

आँखों पर ज़्यादा जोर न दें- अपने नेत्र चिकित्सक के सुझाव को मानते हुए पटल पर अधिक समय और रचनाएँ पढ़ कर प्रतिक्रियाएँ नहीं दे पाती, पर सप्ताह के कवि विशेषांक का बहुत इंतजार रहता है क्योंकि इसमें

रचनाकारों के विस्तृत परिचय के साथ कई रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं। आज के कवि विशेषांक में नवनीता दुबे "नुपूर" जी के परिचय सहित रचनाओं को पढ़ने का सुखद और महत्वपूर्ण सौभाग्य मिला। **अच्छा लगा जान कर कि मेरी तरह ही (मुझे अपने पिता से) आपको भी अपनी माँ से लेखन विरासत में मिला**। इस विरासत को अपने सृजन से सँजोए चलिए। रचनाओं की ओर देखती हूँ तो अपने भीतर आशा समेटे सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने को प्रेरित करती "मैं तो पथिक हूँ" है तो "जय" की खोज करते व्यथित पर लगातार गतिशील मन की अभिव्यक्ति है, "मेरा गाँव" शहरों में रहने वालों की गाँव को जीने की इच्छा की अभिव्यक्ति है। "**गुहार"** अजन्मी बेटी की गुहार का मार्मिक चित्रण तो **हिंदी की उपेक्षा के दर्द को उकेरती "हिंदी" और "प्रेम" में प्रेम की सहज और और सरल अभिव्यक्ति**, त्योहार के रंग.... आपको हार्दिक **बधाई** इतनी अच्छी रचनाओं के सृजन के लिए।

भविष्य में भी ऐसी सहज-सरल रचनाएँ पढ़ने को मिलती रहें....तो निरंतर लिखती रहें।

शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

3.

आज की उत्सव मूर्ति नवनीता नुपुरजी का हार्दिक स्वागत ,,

आपने आज पटल पर **होली** की छँटा बिखेर दी , आपकी सारी रचनायें अलग अलग रंगो की है और इस तरह हम **अन्तरा परिवार** को सात रंगो का उपहार मिल गया ,,

पथिक हम सब की कहानी

हिन्दी की व्यथा हमसे छुपी नहीं है , बहुत कुछ करना है हमें हिन्दी के लिये ,

जय की खोज में उलझे हम सब , प्रेम बहुत ही सटीक और सही रचना **मेरा गाँव** याद आ गया वो गाँव जहाँ हमारे पदचिन्ह आज भी हमारा इन्तजार कर रहे हैं ,

अब इस **गुहार** के बारे में क्या कहूँ ,आँखें नम हो गयी ।।

आपकी रचनाओ की विविधता काबिलेतारिफ है ,,

उम्मीद करती हूँ कि आपकी रचनायें हमें आगे भी मिलती रहेगी ,,

प्रीती जी और पिंकी जी को हार्दिक धन्यवाद जिनकी वजह से हम आपकी रचनाओ का रस ले सके ।

आपके सुखद और साहित्यिक भविष्य की कामना करते हुये

सरिता नारायण

4.

उत्सवमूर्ति आदरणीया नवनीता दुबे 'नूपुर' जी का पटल पर अभिनंदन है| माँ से मिली डायरी लेखन की सीख से उपजा साहित्यप्रेम अदभुत है| अनुभव का मंथन रचनाओं में दर्शनीय है| आपकी रचनाओं में 'ययाति' की भांति सृजन है जिसमें विष्णु सखाराम खांडेकर जी ने मन के चित्र उकेरे हैं| आपकी रचनाएं पथिक, चेहरा, मेरा गाँव, गुहार, फागुन का त्यौहार, हिन्दी,प्रेम सभी अपने आप में बेहतरीन है| बेहतर सृजक से परिचय के लिए अन्तरा शब्दशक्ति व प्रीति जी का हृदय से धन्यवाद,....

डा० अर्पण जैन 'अविचल'

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com